कुमाऊँ के सम्राट

(पहला भाग)

●

लेखक :

स्व० चिन्तामणी पालीवाल

●

प्रकाशक व मुद्रक :

पुरुषोत्तम दत्त पालीवाल

●

प्रकाशन विभाग :

कुमाऊनी साहित्य सदन

चौरासी घण्टा बाजार सीताराम दिल्ली-६

द्वितीय संस्करण २०००] मई १९८६ मू Rs 10-00

कुमाऊनी साहित्य मुद्रक बाजार सीताराम

कुमाऊँ के सम्राट

(पहला भाग)

लेखक:—

पं० चिन्तामणि पालीवाल

●

प्रकाशक:—

पुरुषोत्तम दत्त पालीवाल

●

प्रकाशन विभाग:—

कुमाऊँनी साहित्य सदन

चौरासी घण्टा बाजार सीताराम देहली-६

●

सर्वाधिकार सुरक्षित

द्वितीय संस्करण ४०००] अगस्त १९७३ [मू॰ 10-00

भूमिका

'कुमाऊं के सम्राट' नाम की पुस्तक कुमाऊंनी कविता में जनता के हाथों में दी जा रही है। कवि की अनेक रचनाएँ प्रकाशित हो चुकी हैं जिनमें सामाजिक, सांस्कृतिक तथा धार्मिक प्रसंगों को वाणी का रूप दिया गया है। परन्तु कुमाऊं के सम्राट' नामक इस पुस्तक में चिन्तामणि जी नए रूप में आते हैं। कवि ने स्वीकार किया है कि प्रस्तुत पुस्तक की सामग्री श्री बद्री दत्त पाण्डे, भू० पू० संसद सदस्य के 'कुमाऊ के इतिहास पर आधारित है। साथ ही सुखसागर तथा महाकवि कालिदास के 'रघुबंश' से भी तथा रामायण, श्री मद्भागवत का अनुवाद सुखसागर का सार ग्रहण किया गया है। कुछ जगरिये तथा जतरिए लोग भी प्रेरणा के पात्र रहे हैं। इन सभी की सहायता से कवि ने इस कहानी को कविता का रूप दिया है। कवि का यह प्रयास कितना सफल रहा है यह तो पाठक ही बता पायेंगे किन्तु इतना कहा जा सकता है कि सूर्यवंश, व रघुवंश, कत्यूरी राजाओं व चन्द राजाओं तथा राजा मालसाई की कहानी को बहुत ही अच्छे ढंग में प्रस्तुत किया गया है। पुस्तक के चारों भाग अपने आप में महत्व पूर्ण हैं तथा इनमें कुमाऊ के ऐतिहासिक जीवन की झाँकी मिलती है।

कत्यूरी राजाओं की कहानी को भी सरस रूप दिया है। मालसाई तथा राजुला सौक्याण की प्रेम गाथा को तो सभी ने बड़े ही आकर्षक, सरस तथा मार्मिक शब्दों में लिखा है। यह भाग साहित्य की किसी भी कसौटी पर खरा उतर सकता है। इस प्रकार की रचनाओं से कुमाऊनी भाषा की उन्नति तथा उसके ग्रन्थों की शोध में मेरी विशेष रुचि है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि मालसाई की कहानी प्रत्येक सरस सुहृदय व्यक्ति को आनन्द के सागर के हिलोरों की मिठास दे सकेगा। इसके लिए सचमुच कवि धन्यवाद का पात्र है। आशा है इस कवि को समुचित सम्मान प्राप्त हो सकेगा। मैं भी चिन्तामणि जी को कुमाऊ के इस ऐतिहासिक पक्ष को कुमाऊनी काव्य का जामा पहनाकर उभारने के उपलक्ष में हार्दिक बधाई देता हूँ।

डा० नारायण दत्त पालीवाल
हिन्दी सहायक निर्देशक कुमाऊनी साहित्याचार्य
दिल्ली प्रशासन

॥ जनता का परामर्स ॥

चिंतामणि जै जै राम क्य छैं हाल चाल ।
कुमांऊनी क्या रचना करै आजकल ॥
भलि छैं कुशल बात भल छैं कि तना ।
आज कल तुम कभैं सभा में नि आना ॥
शैलानी किताब तुम क्य भलि बनैछा ।
साहित्य मन्डल बै जो तुललैं छपैछा ॥
मेला सोमनाथ लकि सुन्दर लैखछा ।
सोमनाथ मेवा तुम कभणि देखछा ॥
बलिदान खन्डन लैं अमीन जमीन ।
शरनार्थी पुरुषार्थ कविता प्रवीन ॥
श्रीराम विनोद लै डहौत्रो का हाल ।
धन्यवाद पत्रिका में जवाब सवाल ॥
दिल्ली की झलक तुम क्य भलि बनैछा ।
कुमाऊनी जनता लैं खूब अपनैछा ॥
उमजि उतार तुम समाज क चित्र ।
सब रस भाव उमैं वोहोते विचित्र ॥
सब कुछ लिखी है छा जमाना का हाल ।
आब कुछ और लिखो पराचीन काल ॥
पैलि बै हमरा एनि कस कम छीय ।
राजा महाराजा लोग को कान रौछीय ॥

पैलि राज कैल कय वाद में कोहय ।
सब कुछ लिखी दीयो को कि रहय ॥
हमरा एतिक कुछ निछ इतिहास ।
दन्तकथा मिलि जानी कैक कैका पास ॥
हमरायां कत्यूर जो देवता नाचनी ।
उनू हांति पैलि यटि रजा छीया कनी ॥
जोर जोरै धात लगै कनी जगरीया ।
सांची झुटि कय खबर छीये कि निछीया ॥
तुमु कणि य बातक हनल कये ज्ञान ।
एपार लिखीया आब धरि बटि ध्यान ॥
और एक गहानी जो मालसाई गीत ।
मालसाई राजुला की बतानी पिरीत ॥
यस कनी एक छीय राजा मालसाई ।
विकी राणि काम सेणु सुन्दर सुहाई ॥
हरि इच्छा राजा राणि है गोय बिछोह ।
मालसाई मन मजि हैई गोय मोह ।
राणि क वियोग मजि रजाछा बेचैन ।
दिन उकैं भुक निछा दिन निछा रैन ॥
तब कनी स्वैण मजि मिलिगे राजुला ।
तब जै उ राणि कणि भुल बिलकुला ॥
यस कनी राजुला ऐ मालसाई पास ।
मालसाई भोटगय खोज कैं तालास ॥

यस कनी जगरीया इनरी कहानी ।
हुड़क व्यकुल बजै गीद यों गहानी ॥
यक लकि सब तुम लिखो इतिहास ।
सबु कणि सुणैं दियो य खबर खास ॥

चिन्तामणि

श्रीमानो नमस्कार भलि छै कुशल ।
एलै बेर पहाड़म भलि छै फसल ॥
बरखा कुछ हैरे कमी हैरे गाड़ ।
आजकल बड़ भल मान्योंछ पहाड़ ॥
शैलानी किताब लेखि मेला सोमनाथ ।
कुमाऊँ का समराट सुणैं साथै साथ ॥
एक छा यां कुमाऊनी साहित्य मन्डल ।
शैलानी छापोछ वीलै करि वै अकला ॥
धन्यवाद पत्रिका लै दिल्ली की झलक ।
जतुक किताब म्यरा बनि अब तक ॥
सबु हैबे ठुलि छा य कुमाऊ सम्राट ।
उमजि छै कत्यूरौका का सब ठाठ बाट ॥
सूर्यवंशै वंशावली कत्यूरौका का ठाट ।
कार्तिकेयपुर बटि रंगीली बैराट ॥
पैलि बै यों सूर्यबंशी रघुबंशी हया ।
कुमाऊं में ऐ बांट यो कत्यूर है गया ॥

सूर्या का सुण्त्र हया मनु महाराजा ।
उनरा पै सूर्यवंशी हया भौत राजा ।
धुर्व प्रहलाद और सगर दिलीप ।
भगीरत सगीरत तब तेज सीप ।
राजा अज दसरथ श्री राजाराम ।
बड़ा बड़ा महाराज बल बुद्धीधाम
उई बंश मजि फिर शालीवाहन हया ।
कलजुग आदि मजि कुमाऊँ में गया ।
जोशि मठ राजधानी पैली कै बनौई ।
कार्तिकेय पुर फिर राजधानी हई ।
बलवान बुद्धिवान हया गुण धाम ।
पढ़ि लिया सुणि लिया लेखिया है नाम ।
जति जैले जस कय जति जति रया ।
जसा २ राजा हया जति जति गया ।
जसा जसा राजा हया अन्याई सन्याई ।
इमजि छा यथा योग्य सब दरसाई ।
फिर सुणै मालसाई गोद जो गहानी ।
इमजि देखिया सब इनरी कहानी ।
राजा मालसाई और राजुला सौक्याण ।
स्वेंण, में लागीछ पैली उनरी पछाण ।
राजुला ऐ बागेश्वर रंगीला गीवाड़ ।
दुनागिरी डनाहणि चौरैली की गाड़ ।

विराट नगरी मजि ऐईगे राजुला ।
मालसाई देखि बटि करि गेई भूला ॥
नहैगे वापिस वांबै निकै मुलाकात ।
दरशन करि गेछा निकया के बात ॥
तब फिर मालसाई भोटान हैं गया ।
राई दल पग्रदल फौज लीबै गया ॥
बनि गया मालसाई जोगी जटा धारि ।
घर घर भीक मांगी बनि बै भिकारी ॥
भोटियो दगड़ा उति करि छै लड़ाई ।
राजुला कै जिति व्यबै बै लि आई ॥
पड़िया आधील सब मालूम है जाल ।
रसीक पाठक कों कणि खूब रस आल ॥
के कसर हलि जब लेखीया मिहणि ।
जनता क सेवक में हय चिंतामणि ॥
पत म्यर लिखि लिया के भुलिया भन ।
चिन्तामणि कुमांऊनी साहित्य सदन ॥
सीताराम बाजारम चौरासी छै घन्टा ।
दिल्ली में विख्यात छा य अन्ठ नीछा सन्टा ॥
अल्मोड़ा पाली पछौ कमराड़ रनू ।
डाकखाना भिक्या सैण बला नया कनू ॥

—:※:—

कुमाऊं के सम्राट

सूर्यवंश की वंशावली

भवानी दाहिनी है जो सरस्वती माता ।
गणपति गौरा पति श्री पति विधाता
प्राचीन पुरुषो हणि दिनू श्रद्धाजलि ।
कुमाऊ का सम्राट वीर और बली
जनुकणि आजलोग देवता माननी ।
नाचनी जगेरी मजि अभिनय करनी
आज बनी रयी लोग लकीरा फकीर ।
स्याप भाजि नहै गोय पिटनी लकीर
कां उसा मनख आब कैकणि पछयाण ।
मैसो कणि पड़ि रैछा नाचणै की बाण
नांचणियां मनमौजी खुशीलै नाचनी ।
उन महा पुरुषौ का नाम लै
दुखियो दे यस कनी सनाई सौकरा ।
त्वील मेरि पुज निकै में लैरों तेपरा
असौज का नौरतक कौदिए कराड़ ।
नौरतों में कत्यूरौ कै चढ़यै भैराड़
सुंगर कुखुड़ ल्यए बाकर ढेबर ।
सात नाज सत नोजा बनैए डेकर
कत्यूरीया सूर्यबंशी छीया मालसाई ।
लेखनु मैं कुछ आब उनरी पिनई

सरस्वती सुमिरी बै लेखनी उठानू ।
जस अनुभव हौछा सबूकै बतानू ॥
कत्यूर छी धरमात्मा सूर्यवंशी राजा ।
उनारा वंपूज छीया मनु महाराजा ॥
सृष्टी का आदि मजि मनुदेव हया ।
मनु और सतरूपा बिधि उपजाय ॥
मनु जी का च्यला हया नृप उत्तानपाद ।
ध्रुव हरि भक्त हया उनरि औलाद ॥
चौथी वस्था मजि मनु तपस्वी है गया ।
दुसरा जनम फिर दशरथ हया ॥
मनु जी का मन मजि य विचार हय ।
चौथा पन आईन गोछा भजन निकय ॥
सूर्यवंशी रजा फिर सगर लै हया ।
साठ हजार च्यला जैका जलि मरि गया ॥
दूसरा सुपुत्र हय असमन जस ।
अन्सु मान च्यल जैक त्रिलोकी में यस ॥
पै उनरा पुत्र हया औ राजा दिलीप ।
रावण कै जितणै की सोचि तरकीप ॥
महाराजा दिलीपैले वाण छोड़ जब ।
मंदोदरी गोद मजि छिपि गोंय तब ॥
दालीपा का च्यला हया राजा भगीरत ।
जनर सुयस करि जाणूछ जगत ॥

तपस्या कैवटि ल्याया भागीरती धार ।
सागरा का च्यला तेरा तर सनसार ॥
भागीरत पुत्र हय राजा कुकस्थान ।
बल पराक्रम जैक उनरै समान ॥
उनू है पछिल फिर राजा रघु हया ।
तभणि वै सूर्यवंशी रघुवंशी हया ॥
रघुवंश मजि फिर हया राजा अजा ।
जनरा सुपुत्र हया दशरथ रजा ॥
दशशीशं मृत्यु हलि जैका च्यला हथ ।
दसौं दिसा रथ चलि उंवी दशरथ ॥
दशरथा चार पुत्र जगत प्रकाश ।
जनरा नामलै हौछा अन्धकार नाश ॥
असुरौंक नास करि हर भूमि भार ।
सुर मुनि सुखदाई चरित्र अपार ॥
•अयोध्या में जब हया राजा श्रीराम ।
प्रजा जन नर नारि सब सुख धाम ॥
राम राज्य बैठे त्रीयलोका, हर्षिय जन गए सब शोका ।
वैर न करिह काहू सन कोई, प्रभु प्रताप बिसमता खोई ॥
सब नर करहि परस्पर प्रीती चलहिं स्वधर्म निरत श्रुतिनीती ।
सुख सम्पन्न सदा रहे धरणी त्रेता करैं सतयुग की करणी ॥
राम ज्यू का राज मजि सब सुख हर्ष ।
उनर स्वराज्य रय ग्यारह हजार वर्ष ॥

मरियादा बाधि गया श्री राजा राम ।
यों शरीरै सुरलोक गया सुखधाम ॥
इनरा सुपुत्र फिर लवकुश हया ।
और तीनै भाइयो का द्वी द्वी च्यलाइया ॥
लवकुश चरित्र लै जगत विख्यात ।
रामज्यू है कम निछा बल बुधीबात ॥
रामज्यूक च्यल कुश हय पै मसूर ।
उनूले आपण राज बसाय कसूर ॥
अयोध्या नगरी तब हैगयी उदास ।
नारि रूप धरि बटि गयी कुशैपास ॥
हात जोड़ि अयोध्या लै कुश हांती कय ।
मैं तुसरा पूर्वजौ की राजधानी हय ॥
तुमु विना अयोध्या कि दुखि हैरै प्रजा ।
हमारि पालना करौ यई मेरो असि ॥
सुणि बटि अयोध्या का करुण बयान ।
कुश राजा अयोध्या हैं करि द्वी पयान ॥
अयोध्या नगरी कणि सुन्दर सजाय ।
सुखी हैगे प्रजा तब बड़ यस छाय ॥
नाग राज कुमुद कै जीती वै लणायी ।
वीकी चेलि कुमुदनी ब्यवै बटि ल्यायी ॥
अग्नी साक्षी ब्या करछा गांधरव रीती ।
कुश कुमुदनी का पैजनमा अतिथि ॥

यौंरजा अतिथि लकी बड़ें भारी हया ।
आसण पूर्वजो है बे कम क्वे निरथा
कुश बैवै बीरगती स्वर्ग न्है गया ।
अतिथि अयोध्या मजि सम्राट हया
अतिथि का राज मजि इन्द्र करि वर्षा ।
खुब अन्ना पैद हय प्रजा कणि हषि
बरुणै लै खोलि दीया सब जल स्रोत ।
कुबैर लै धन दीवै करि ओत प्रोत
अतिथि का यस पैजे खूब फैली गोय ।
निसीथी रजका उति उनर ब्या हय
निसीधनी नाम छोय निसिवै की कन्या ।
निसिध सुपुत्र हय उनीक प्रजन्या
अयोध्या का राज काज उकणि दी गया ।
वृद्ध वस्था अतिथि पै स्वरग न्है गया
निसिधक नल हय नलक पै नभ ।
नभक पुण्डरीक हय पुन्डरीक वत
विक पुत्र क्षेम धन्वां वीक देवनीक ।
देवनीक पुत्र हय आदि नग ठीक
आदिनग रजा छोया वीर प्रराक्रमी ।
गुणवान शीलवान सुशील स्वधर्मी
प्रजा की पालन करि गया सुरधाम ।
उनर सुपुत्र हया परियान्त नाम

परियन्ता शीलवान सुन्दर सुनाम ।
शीलवान पुत्र हया तेजस्वी उन्नाम ॥
उन्नाम ब्रिजघोष ब्रिज वीक नाम ।
ब्रिज नाम लकि फिर गया सुरधाम ॥
शंखणव हय तब राज अधिकारी ।
उनरलैं अयोध्या में यसरय भारी ॥
शंखणवा पुत्रहया विशान्त नरेश ।
उनूलै लड़ायी मजि जीता सब देश ॥
वियूशान्ता का विम्वास्वह हया गुण धाम ।
विश्वास्वह पुत्र हया हर्णयभ नाम ॥
हर्शणव हया कनी विष्णु जी का अंश ।
उनूलै उज्जवल कय फिर विर वंश ॥
विक पुत्र वैसभ छी विक ब्रह्मरिष्ट ।
ब्रह्मज्ञानी रजा छीया श्री ब्रह्मारिष्ट ॥
उनरा सुपुत्र छीया पुत्र रुथ नाम ।
पुत्ररुथा पुत्र हया पुस्य सुखधाम ॥
पुस्या का छी ध्रुवसन्धी बातुनी बहौत ।
इनरा छी सुदर्शन गुणवान भौत ॥
ध्रुवसन्धी एक दिन मारि दी बाघैलै ।
सुदर्शन वचि गया आपण भागैंलै ॥
सुदर्शन अयोध्या में कर जब राज ।
बिधृधकाल वन मजि गया हय काज ॥
उनरा सुपुत्र हया राजा अग्निवर्ण ।
काम पियासा में जो है गया अवर्ण ॥

राजा अग्निवर्ण छीया वहौतै बिलाशी ।
ऊनरा राजम छिया परजा उदासी
उनुकणि प्रिय छिय कामी नी कलाप ।
नई नई नारियों का वारता कलाप
महलौं में मद मस्त रछीया मगन ।
कारव बटि कामिनी क कोमल बदन
राणियां छी रनीवास नई नबेलिया ।
हिनौला में भूलछिया सब सहेलियां
उनरा दगड़ा रजा खेल छी हिनौला ।
भिड़ि बै अंगाव तब रंछी रंग बौवा
राणियों दगड़ा सदा रछीया मगन ।
प्रजा कणि निहछिया कभैं दरशन
उनरा दर्शनों हणि प्रजा छी आतुर ।
परजा छी सच्चरित्र राजा कामातुर
यथा राजा तथा प्रजा निछी उबखत ।
राजा छिय कामी क्रोधी प्रजा छी भगत
झरौकौ बै कर छीया सरज्यु की शैल ।
उज्वल निर्मल जल लहर छ छैलर
एक दिन परजा लै अरज सुणाई ।
रजा का दरश चानु हम सब भाई
मंत्रि औ दिवानों तब अरज कै पेश ।
अग्निवर्ण आज्ञा हैई आवो सब देश

खुटा दरश तुम करि जाओ प्यार ।
बों खुटक कुर कुच करि दिय भ्यार ॥
प्रजा लै आपण तब धन भाग माना ।
खुटा का दरश कया धरि बटि ध्यान ॥
यसा छीया अग्निवर्ण काम वशीभूत ।
कसा कसा हैई जानी कपूत सपूत ॥
उई सूर्यवंश मजि कस कसा हया ।
उई वंश मंजि एक रजा यों लै हया ॥
मान धाता महि पति सगर निलीप ।
भागीरत अमरीष धुव कुल दीप ॥
सूर्य कुल मजि हया वुल में पतंक ।
अग्निवर्ण यसा कुल में कलंक ॥
य रजैलै भौत कय नारि रंग भोंग ।
आखिरी है गोंय फिर राज क्षयमा रोग ॥
रजा आब क्षय रोग है गया बिमार ।
जाई निसकना आव भितेर बै भ्यार ॥
रजै कणि आव कुछ निहातिना ध्यान ।
राज काज चलाणैंरी मंत्रि व दीवान ॥
दिन प्रति दिन रजा विमारै रहया ।
आखरी पै एक दिन स्वर्ग न्है गया ॥
उनरा जीवन मजा निहे सनतान ।
प्रजा कणि उबानक बहौत छी ध्यान ॥

एक राणि उबखत गर्भवती छीया ।
उनी कणि तीन म्हैण तब हैर छीया ॥
सब प्रजा उबखत है गेछी निरास ।
उयी गर्भ पर तब लै रछीया आस ॥
तीन बरि चार हया चार बटि पांछ ।
छयों सातों आठों नवो दशौं हैगो सांच ॥
दशवैं मैहण तब च्यल हई गय ।
प्रजा कणि उबखत बण हर्ष हय ॥
अयोध्या में उबखत मनाई गे खुशी ।
राम जन्म मजि खुशी हैछी जसी उसी ॥
जागिगे यो बंश मजि दुब कसी जड़ा ।
वीक बाद रघुवंश फिर भौते बड़ा ॥
विक नाम सिन्धु छीय समुद्र समान ।
गुणवान ज्ञानवान चतुर सुजान ॥
सिधुका सुपुत्र हया श्रीमख रजा ।
वीर और बलवान राजाओं का राजा ॥
मखका सुपुत्र हया श्री प्रसुभुत ।
प्रभुसुता सेधिहया भौत अद्भुत ॥
सेधि का छै अमरहण वीका सदसवान ।
सदसवाना विस्व बाहु हया विदवान ॥
विश्व वाहू पुत्रहया श्री प्रसेन जीत ।
उनरा सुपुत्र हया तकछक पुनीत ॥

तच्चक का पुत्र हयर पुता का बिट्ठला ।
बिट्ठला का विहदर्ण हया भौत भला ॥
विहदर्ण पुत्र हया श्री वस्व बिद्ध ।
बस्व विद्धा प्रति व्योम जगत प्रसिद्ध ॥
प्रति व्योमा पुत्र हया श्री राजा मान ।
उनरा छी दिवाकर भौत गुणवान ॥
दिवाकर पुत्र हया शीरी सहदेव ।
सहदेवा पुत्र हया वृपदस्व देव ॥
वृहदस्वा पुत्र हया शीरी मनू मान ।
मनू माना पुत्र हया प्रिति काखवान ॥
प्रिति काखा सुप्रतीक वीका भरचदेय ।
भरचदेय प्रजा पर अधिक सनेय ॥
भरचदेय पुत्र हया श्रीसुनखत्तर ।
सुनखत्तर लंकि हया भौत पवीत्तर ॥
नखत्तरा च्यला हया राजा पुपकर ।
पुष्करा का च्यला हया अत्तरिक्षनर ॥
अन्तरिक्षा सुतया छै वी० अविभाजिता ।
अविभाजिता का पुत्र वृहदाज मित्त ॥
वृहदाजा बद्रि हया वीका छै कृतज्या ।
कृतज्या का पुत्र हया गुणग्या रणज्या ॥
रणज्या का संजया छै सजया का शाक्य ।
शाक्य का छै सुहदेय सुन्दर सुवाक्य ॥

सुहृदे का देगल छैं वीका प्रसेनजीत ।
त्रसेन जीता च्यला हया सुद्धक पुनीत ॥
सुद्धका का कनक छै रहनी भलिका ।
यो छै सब सूर्यवंशी अंश मनू जीका ॥
कनका का सुख्य हया सूर्यख्याका सुनीम ।
सूर्यवंशी भारतै की अयोध्या भूमिम ॥
यतुक नृपति हया तीरेता द्वापरा ।
द्वापरा का अन्त मजि यथा उथा सरा ॥
सूर्यवंशी रघुवंशी फिर भौत हया ।
कलियुग मजि पैऊ कुमांऊ में गया ॥
उई सूर्यवंशी एक छी शालीवाहन ।
अयोध्या वैं उत्तरा खन्ड गया प्रयटन ॥
'कत्यूरों' के मूल—जोशीमठा नजदीक सुन्दर सुस्थान ।
प्राचीन मन्दिर उति नृसिंघ भगवान ॥
ठन्डी हवा ठन्डपाणि हरीया जंगल ।
पशु पंछि कोलाहल करनी मंगल ।
अनेकों प्रकार उति फूल और फल ।
अनेकों औषधे उते भला हवे भल ।
जड़ि बूटि पेड़ पत्ता अनेकों प्रकार ।
जन औषध्यों लै हौछा पर उपकार ।
उति घुम हांगि जब सूर्यवंशी आय ।
रमणिक स्थान देखि उति रमी गया ।

उशाली वाहन छीया नृप समराट ।
उनूलै जमाय उति बड़ा बड़ा ठाट ।।
अखिल भारत मजि उनरा छी राज ।
उति बटि चलां छीया सब राज काज ।।
ह्यौन हणि उति बटि भावर जल्लीया ।
खैरागढ़ धामपुर ढिकुली रछीया ।।
कमला धमल और काला डुंगी माल ।
सीतावणि पाटकोट गौली गगा छाल ।।
ह्यौंन हणि तरायी में करं छीया राज ।
रुणि हणि जोशी मठ रंछी महाराज ।।
उनुलैं आपण उति बनैं राजधानी ।
महैला बनाया उति बड़ा धनी मानी ।।
सात पुस्त तक कय जोशी मठ राज ।
कार्तिकेय पुर फिर आया माहराज ।।
कीर्तिकेयपुर बै यों कत्युर है गया ।
तब बटि सूर्यवंशी कत्युरीया हया ।।

कुमाँऊ के सम्राट

कत्यूर वंश

जोशी मठ बटि एति कसिक ए एया ।
एमें एक रहस्य छा सो समझी जया ।।
सूर्यवंशी राजा एक बासूदेव छीया ।
कत्यूरीया राजाओं का पुरबज छीया ।।

जोशी मठ मजि छीय राज दरबार ।
राज काज चलु छीय भलि पकार ।
भक्ति भाव दया दान उनौं कैं पसन्द ।
अन धन दही दूध सब छा आनन्द ।
नित्य प्रति कर छीया धरम करम ।
पूजा पाठ यज्ञ दिग्य नीयम धरम ॥
इनरा वां एक दिन नरसिंह आया ॥
इनरी भगती देखि भौत खुशी हया ॥
उबखत रजा तब जै रछी शिकार ।
राणि छीया घर कणि सुन्दर बिचार ॥
नीम वन्ती धर्मबन्ती अति प्रियशील ।
दान दया धरम में सुन्दर सुशील ॥
घर कणि साधु जब अतिथि ए गया ।
राणि लै आदर कय भलिक बैठाया ।
तब जै अरज करि जोड़ि बटि हात ।
कावै आछा कसि आछा बताओ के बात
क्य खातिर सेवा कस क्य तुमरि इच्छया ।
क्य चैंहैछा अनधन मणि मोती भिच्छया ।
और के निचैन कंनी साधु महाराज ।
भोजन करण चानु तुमरा यां आज ।
आपण हातैले तुम भोजन बनाओ ।
मणि मोती क्ये नीचैना भीतेर लिजाओ

राणि कैंछा महाराज कसिक बनानु ।
एति आज पाणि नीछा पाणि कावे ल्यानू ।।
य बखत कुछ निछा दूद दही घृत ।
रजा निछैं घर कणि क्य करनु कृत ।।
तब कनी महांतम सब छा मौजूद ।
भितेर जैंबटि देखो घृत दही दूद ।।
महांतमा ज्यूल मारि चीमटै लै धर्र ।
उतकणि फुटिगया पाणि का मंमर ।।
राणि गे भीतेर जब भरिया छा भना ।
भ्यार एबे देखी छी ता पाणि की छा रना ।।
तब जसी राणि कणि अचरज हय ।
बैठो बैठो महाराज फिर फिर कय ।।
राणि लै पैं सटरस भोजन बनाय ।
साधु महाराज कणि खवाय पिवाय ।।
आब कय महांतमा करनु आराम ।
थोड़ि देर लेटि जानू फिर जौला धाम ।।
राणि लै पलंग मजि लगाय बिस्तर ।
महातमा लेटि गया तब तत पर ।।
अघिला क्य हौछा आब देखि लियो हाल ।
होनहार कसि हैछा करि लियो ख्याल ।।
दोहा–जैसी होनी होत वता तैसो उपजै बुद्ध ।
होनहार हृदय बसै बिसर जाय सब सुद्ध ।।

रजा जब उबखत सिकार बै आया ।
पलंग में लेटिगया क्वे महातमा पाया ॥
रजा कणि देखि बटि बड़ गुस्स आय ।
उठाय रजैं लै तब खड़क चलाय ॥
खूनै की जगम तब दूध आई गय ।
तब जसी रजा कणि अचरज हय ॥
तब जै रजैंले पुछि राणि हांति बात ।
कोछिया यौं जैक मैले काटि हैछा हात ॥
राणि कैंछा महाराज यौं छैं कोई सन्त ।
इनरा मकणि लकि निमिल के अन्त ॥
तपस्वी छैं महातमा सन्त सिरोमणि ।
इनुलै आश्चर्य बड़ दिखाय मकणि ॥
इनुलै म्यहाति जब भोजन मांगौछा ।
मैल तब घर कणि कुछ निछा कौछा ॥
तब जैं इनुलै कय सब छा आनन्द ।
मैं तुमरा घर देखि बहोत प्रसन्द ॥
इनुलै दिखाय तब यस चमचकार ।
चिमटै लै पैद कैदि एति जल धार ॥
घर मजि दूद दही भरी गया भना ।
तब मैले इनू हणि बनाय भोजना ॥
भोजन कैबेर फिर इनुलै य कय ।
आराम करण चांछी कति कण हय ॥

मैल कय महांतमा कै लियो आराम ।
पलंग में लेट जाओ में करनु काम ॥
तब जै यो पलंग में एति लेटि गया ।
आव तुम पुछि लियो को सजन हैया ॥
रजैलैयो सुण जब राणि का बयान ।
तब जै नरसिंह ज्यूक आइ गोय ध्यान ॥
रजै लै विनती करि नरसिंह हणि ।
महातमा तुम दियो सरांप मकणि ॥
म्यरा कैले हैई गोछ भारि अपराध ।
पराश्चित करुला मैं बताओ क्ये साध ॥
तब कय साधुलै मैं नरसिंह हय ।
तुमरि भगति देखि प्रसन्न है गोय ॥
तब आय तुमरायां करण भोजन ।
तुमकणि आपण यां दिण दरशन ॥
बिन सोचि समझी बै कर तुम बार ।
पुछ नै क्ये कै हाति लै चलाय हत्यार ॥
देखो म्यरा हांत मजि चोट लागी गेछा ।
यई मेंरी मुरती में धाव हैई गोछा ॥
आव तुम एति बटि और कै न्है जाओ ।
कै आपणी राजधानी अलग बनाओ ॥
और देख सुणि ले तु य सराप म्यर ।
खुब पर भाव शालि राज हल त्यर ॥

अखण्ड भारत मजि साम राज्य रल ।
गिरि राज चक्र चूड़ामणि पद हल
देश देशा रजा सब रहैला आधीन ।
कुमांऊ का समराट हला परवीन
एक बार तुमरि या दिग विजय हलि ।
भारत भूखण्ड मजि धाक जमी रली
आव य सांरप म्यर सुणि ले तु बात ।
ज दिन य मूरतीक टुटि जाल हात
उ दिन बै त्यर हल राज्य में विध्वंस ।
छिन्नभिन्न ह्वइ जाल त्येय हल बंश
नरसिंघ ज्यूलै जब य सरांय दिय ।
रजैले सरांप फिर सिर धरि लिय
जोशि मठ बटि तब कत्यूर ए गया ।
यशिक यों सूर्यवंशी कत्यूरीया हया
उति बै इनर हय राज्य विस्तार ।
चक्रवर्ती समराट हया संसार ।
उवखत भारत में कत्यूरोंक राज ।
गिरि राज चक्र चूड़ामणि महाराज ।
दिल्ली बै रोहिलखण्ड सिक्कम तलका ।
बंगाल नैपाल बटि काबुल तलक ।
चारो दिशा चौतरफा कत्यूरौ की धाक ।
भारत भूखण्ड मजि जमि गयी साक

गढ़ वाल राज लकी उति वै कछीया ।
ह्योन हणि भावर में ढीकुली जछीया ॥
छै सैहैण भावर में करं छीया राज ।
जमां छीया आपण यों सब साज बाज ।
इनर स्वराज्य रय पहाड़लै देश ।
बड़ा बड़ा पैद हया भुपति नरेश ॥
एक हबे एक बांकी वीर पराक्रमी ।
पुन्यातमा धरमातमा सुनीति सुधर्मी ॥
गुण विद्यावान हया और दया दानी ।
वेदशास्त्र पुराणों का विदवान ज्ञानी ॥
यज्ञ दिग्व धर्म कार्य नित्य कर छीया ।
विना धर्म कार्म करि खाण निखछिया ॥
जाकणि जो काम कर घैट छींया धज ।
बृहद खम्ब गाड़ छी कत्यूरी या रजा ॥
वौहतें बनाई दीया मन्दिर विशाल ।
कुमांऊ लै गढ़वाल और नैनीताल ॥
कुमांउ में भौत जगा खई खम्बो खौला ।
कत्यूरौ का बनाइ या मन्दिर लै नौला ॥
इनरा जो बनाइया सुन्दर सुस्थान ।
कुमांऊ में भौत जग छन विद्यमान ॥
बागेश्वर मन्दिर लै इनुलै बनाय ।
द्रौणगिरी मन्दिर लै इनुलै बनाय ॥

द्वाराहाटा मन्दिर लै कत्यूरी रजों का।
और कई नौला उति इन पूर्वजों का॥
तीरथ जो एक उति श्री विमान्डेश्वर।
कत्यूरौक हय यौलै प्राचीन मन्दर॥
राणि बाग बनाईया कत्युरी राणिक।
बगीच बनाय उति गौला क पाणिक॥
फल फूल साग पात सब उति बोय।
तब जसी वीक नाम राणि बाग हय॥
राणिखेत डान लकि कत्यूरौक हय।
उबखत विक नाम राणिछेत्र हय॥
राणि लै बनाय योलै शैल कर हणि।
कभै कभै राणि जैछी उती घुम हणि॥
तला दोरा इड़ा एक थोकदार रनी।
एक जगा उतिक नौ बार खामों कनी॥
पुराण पथरौ का बां बार छन खम्ब।
कत्यूरौ कै हनला यों बार विहद स्तंब॥
वला नया कमराड़ मानिला मन्दिर।
कत्यूरौ कौ बनाइया हनल आखिर॥
लिखाई खुदाई वीकी बहौत प्राचीन।
उकणि बनाणियां क्ये हनल प्रवीन॥
यसा यसा भौत चीज इनुलै बनाया।
पाणि नौला धरा लकि मन्दिर बनाया॥

धर्मशाला देवालय विद्यालय खोला ।
सड़का बनाया भौत काटि बटि भ्योला ॥

भौत भौत मन्दिर कैं भूमि करि दान ।
बामणौ कै दान दिबै कर सनमान ॥

विद्वान बामणौ की कदर कछीया ।
साधू सन्त सज्जनों की सेवा कर छीया ॥

गऊ पूजा कर छीया और गऊ दान ।
नित्य प्रति ईश्वरक धर छिया ध्यान ।

अतिथि फकीर कणि दीछीया यों दान ।
राजनीति जाण छीया ज्ञान लै विज्ञान ॥

प्रजा कणि सुख दिछी तंग नी कछीया ।
गरीब विधवा हाति कर नी लिछीया ॥

रजा महाराज सब मिलण अछीया ।
इनरा वां विदेशों का राजदूत छीया ॥

राज कर्मचारि लकि वीर और बली ॥
पुरुषकार बाट छी·ा पदवीलैं भलि ॥

राज्य अभिषेक जब इनरा हंछिया ।
देशा देशा महाराज एति ऐ जंछीया ॥

अतिथि फकीर और राज कर्मचारी ।
पन्डित बिद्वान लकि भाट लै भिकारी ॥

सबु कणि उति तब मिलू छीया दान ।
अन धन वस्त्र भूमि आपू अनमान ॥

कुमाऊ के सम्राट

* कत्यूरी चक्रवर्ती राजा *

शालीवाहन देव पैली जोशीमठ आया ।
चार पांछ पुस्त बाद बासुदेव हया ॥
बासुदेवा च्यला फिर कंनक देव हया ।
कनक देव काबुल में लड़ि मरि गया ॥
कनक देवा बाद फिर बसन्त देव हया ।
खरय कल्याण देव त्रीभुवन देव ॥
निवृत देव निस्तारण ललित सूरदेव ।
ललित सूरा बाद हया सम्राट भूदेव ॥
विका बाद निवृत छैं नाथु देव रानी ।
फिर हया इष्ट देव दिशा महारानी ॥
ललित मोहन देव श्यामा महारानी ।
सलोनादित्य समराट सिघावली रानी ॥
पैजसी इच्छट देव राणि सिन्धु देवी ।
दैसट समराट राणि पद मल देवी ॥
पदमल देव फिर इसाल दे रानी ।
सुभिक्षण हया फिर समराट ज्ञानी ॥
यतुक यौं कत्यूरिया समराट हया ।
गिरि राज चक्र चूड़ा मणि पद हया ॥

इनरा राणिया लकि इनु जसै छिया ।
पति व्रता सति सीता लक्ष्मी देवीया ॥
पति हवै दुसरौ कैं देखना निछीया ।
बिन पति खाइये आपू नी खंछिया ॥
यसा यसा नारिया यों छोया धर्मवन्ती ।
सती शिरोमणियों में जनरी छा गिन्ती ॥
और एक राजा छिया इनरा पूर्वजा ।
सूर्यवंशी कत्यूरिया राजाओं का राजा ॥
वीक नाम समन्तक एक वीणि राणि ।
राणिक नौ श्रीमति सज्य महाराणि ॥
चक्रवर्ती समराट हया बड़ा ज्ञानी ।
वीर वली पराक्रमी बड़ा दया दानो ॥
वीक एक च्यल हय बड़ ज्ञान बान ।
धनवान ज्ञानवान चतुर सुजान ॥
उलै हय सम्राट बलि पराक्रमी ।
दयावान ज्ञानवान सुनीति सुधर्मी ॥
इनुलै बहौत जगा सड़क बनाया ।
बागेश्वर मन्दिर कैं जागीर चढ़ाया ॥
सुगंधित पदारथ फूल पती धूप ।
बागेश्वर मन्दिर में चढ़ा छीया खूब ॥
आपण जमान मजि चलै गया धाक ।
शिला लेख लेखि बटि जमै गया साक ॥

इनरा सुपुत्र फिर खरप देव हया।
प्रतिष्ठित चक्रवर्ती समराट हया॥
परया सुपुत्र फिर हया अधिराज।
चक्रवर्ती समराट हया महाराज॥
वीक राणि लज्जादेवी कुलै की छी लाज।
उनीलै उत्पन कया त्रिभुवन राज॥
योलै हया चक्रवर्ती चतुर सुजान।
धनवान विदवान बड़ै ज्ञान वान॥
इनुलै बहौत बड़ा ठुल काम कया।
बागेश्वरा मन्दिर में जागीर चढ़ाया॥
इनरा दुसरा च्यल बड़ा धनीमानी।
धार्मिक प्रवृतिक बड़ दया दानी॥
चन्द नन्दा देवी कणि भूमि करि दान।
एक द्रोण और करि बागेश्वरा थान॥
एक राजा और छीय वीक नौ निवृत।
दयादानी धरमात्मा बड़ सत्यवर्त॥
सर्व शक्ति शाली और मृदुल स्वभाव।
धीर वीर बलवान राजसी प्रभाव॥
सुचरित्र गुणवान शास्त्र विदवान।
चलाण में निपुण छी तीर लै कमान॥
भक्ति भाव विचार छैं भजन पूजन।
शिव जी की सेवा मजि जैक तन मन॥

यज्ञादिग्य भौत कौछी धरम करम ।
यस कीर्ती बढ़ि गई भौत भौ भरम ॥
यसा छिया परजा का गुण सुलक्षण ।
दासू देवी राणि एकी च्यल इस्तारण ।
इस्तारण देव लकि सम्राट हया ।
धनवान गुणवान विद्वान हया ।
वीका राणि धरा देवी च्यल ललितसूर ।
कुमांऊँ का सम्राट हया भरपूर ॥
वोहेतै प्रतिमाशाली बड़ा सूर वीर ।
शत्रु पर चलां छीया तरकस तीर ॥
उनीलै उत्पन्न करा सम्राट भूदेवा ।
ब्रह्मा विष्णु शिवजी की कछीया जो सेवा ॥
बुद्ध धर्मा शत्रु छीया बड़ा विद्ववान ।
सत्यमार्गी सनातनी सुन्दर सुजान ॥
सुन्दरता उनरी के बरणि निजानी ।
देश देशा महाराज शिर झुकै जानी ॥
उनरा जो किरीटोकी झंकार पड़िछा ।
भुदेवा का कानों मजि कल हैई जैछा ॥
कमल छैं नेत्र जैका मुख पूर्णचन्द ।
तप तेज चम कौछा मुख में स्वछन्द ॥
नव पल्लव जसा हा तौ का हतेली ।
सुनका सिलिप जसा पैरो का पैतली ॥

कन चन शरीर जैक सुशोभाय मान ।
कत्यूरीया सम्राट यसा दिव्यवान ॥
यस छीया धनीमानी बड़ा दया दानी ।
बेद शास्त्र पुराणों का विद्वान ज्ञानी ॥
ब्रह्मा विष्णु पुजं छीया शिव भगवान ।
भूत पूजा निकछीया पशु बलिदान ॥
बुद्ध धरमा का छीया यो कट्टर विरोधी ।
सनतानी पन्डतों कै ल्याछीया सोधी ॥
उनू हैंवे पैली उति बुद्ध धर्म आय ।
कुमाऊँ वै बौद्ध मत उनुले हटाया ॥
राज कर्मचारियों कणि पैंसन दी छीया ।
पन्डिता विद्वानों कणि गांव ग्वेल दीया ॥
कभै निपूजछीया ऊ काली महाकाली ।
देवी और गढ़देवी भैरवी कपाली ॥
उवखता सौणियों कौ नीछीया के परदा ।
शुद्ध सनातन छीया भूल निछी गर्दा ॥
यों लैं हया प्राचीन इनरा पूर्वजा ।
कुमाऊं का सम्राट सूर्यवंशी राजा ॥
कत्यूरीया रजा पैली यस यस हया ।
दसौ सदीवाद पै यौ हरै बीलै गया ॥
दिल्ली में कुमाऊ रजा करि गया राज ।
दिल्ली का तखत मजि कुमाऊ का ताज ॥

राजधानी इनरी छा कार्तिं क्ये पुर ।
ठुलि राजधानी रइ उनरी कत्यूर ॥
गोमती व सरयू का बीच में यस्थान ।
कुमांऊ में उनर य हय राजस्थान ॥
बड़े बड़े शहरै वां बड़ै बड़े ठाट ।
तल्ली हाट मलि हाट रण पुलीहाट ॥
द्वाराहाटा सेलीहाट और पली हाट ।
ब्रह्मपुर लखन पुर रंगीली बैराट ॥
दस सौ बरष रय इनर यां राज ।
बड़ा बड़ा चक्रवती हया महाराज ॥
बाद में इनरा एति आल काछी गया ।
छैयो जगा हणि तब छैं आल न्है गया ॥
एक गे गंगोलीहाट एक डोटी हणि ।
एक आल न्है गेछा असकोट हणि ॥
एक न्हैगे पाली पछो एक गढ़वाल ।
कीर्तिकेयपुर मजि रैगे एक आल ॥
आधीला पढ़िया आव धरि बटि ध्यान ।
दसौं सदी बाटा का यौ करनु बयान ॥
उभणि वै कत्यूरौ कौ सामराज्य गय ।
मान्डलिक रजा हया ठुल क्ये निहय ॥
जगु जगु बनि गया मान्डलिक रजा ।
निकय क्वे ठुल काम निघैटा क्वे ध्वजा ॥

इनरा आपस मजि हई गयी फूट।
आपणि आपणि ओर हैगे लुटा लूट॥
देश देशों बटी फिर राज छुटी गय।
कत्यूरों क राज फिर कुमांऊ में रय॥
कुमांऊ लै आखिरी में हय छिन्न भिन्न।
आपस में लड़ि मरि हयो गया खिन्न॥
नरसिंग ज्यूक सांप सामणि ए गय।
धाम ज्यो का समय वै विधन्स है गय॥
कत्यूरी आखरी राज धामदेव हया।
दूसरी अलाका एक विरम द्यो हया॥
पालि पछौ गिवाड़ में बैराट छा एक।
रामगंगा किनरा में शुभ स्थान नेक॥
लखनपुर उति एक जगा छा बंजर।
मौजूद छै आजि उति पुराण खन्दर॥
पालि पछौ कत्यूरौ की एति राजधानी।
जतरीया जगरीया सब ए बतानी॥
एति एक रामगंगा मजि झौकौ रौ छा।
झौक रौका पास एति एक सुह ठौछा॥
झौक रौका मछा हया इनरा सैतुवा।
सुइ ठौक बताई खानी यों पिसुवा॥
मौहरुवा छीपली कुंवर गैतान।
फौजि कमान्डर हया मेजर कप्तान॥

दी भाई कढैत हया भीमा और पामा ।
द्वीय बीर और हया स्यूरा प्यूरा नामा ।।
एक वीर और हय मंगल पठान ।
जैदगड़ा पैलो हय युद्ध घमासान ।।
कत्यूरौ का दगड़ा उ जब हारि गोय ।
तभणि वैं कत्यूरौक दगड़िया रय ।।
बड़ू सजे पाल छीया इनरा बामण ।
शुभाशुभ दिन बार बतानी लक्ष्मण ।।
गुरुज्ञानी खेगदास भेकदास ज्ञानी ।
जगरीया यों इनरा गुरुजी बतानी ।।
भौत जगा हैगे कनी इनरी लड़ाई ।
बड़ा बडा रजौ हणि करि दी चढ़ाई ।।
सब जग जीत हई है गया विजयी ।
कत्यूर वंश का छीया हार कैं निहयी ।।
धामद्यो की फौज छीया वीर बलवान ।
तब छिय कत्यूरोंक मान सनमान ।।
धाम द्योक राज रय देश लें पहाड़ा ।
धामपुर बिजनौर भावर पहाड़ा ।।
धामपुर बसाईयां धामद्यो कै हय ।
धामद्यो का नामलै वां धामपुर हय ।।
धामद्यो लै उबखत जिता सब धामा ।
भावर तराई मजि चल खूब नामा ।।
सीताबणि पाटकोट कमला धमला ।
कालाढुंगी लामा चौड़ा भावरा जंगला ।।

खैरागढ़ जंगल में कत्यूरौ क धाम ।
धामह्यो लै करा तब बड़ा बड़ा काम ॥
चौतरफा जीत हई बड़ौ हय यसा ।
सूर्यवंशी पछाऊँ में हया सूर्य जसा ॥
सब चीज हणि हौछा समै बलवान ।
ऐ पुजि गो कत्यूरौ क अब अवसान ॥
विनासौ समय आछा बुद्धि विपरीत ।
तब राजा महाराजा करनी अनीत ॥
आई गोछा कत्यूरौक बिनास समय ।
अभिमान भरि गोछा हैगी निरभय ॥
कसा कसा रजा पैली धरमात्मा हया ।
बिनास समय आया अन्याई है गया ॥
मरनी द्या किरमिलै जामी जानी पंख ।
उसै तब कत्यूर लै है गया निशंक ॥
इनुलै दुनियां मजि कर अत्याचार ।
दुराचार भ्रष्टाचार और ब्याभिचार ॥
यसा यसा कण लगा वार परहार ।
प्रजा मजि तब जसो मज हाहकार ॥
बाज घटै भाग लिनी वंजै की रकम ।
यस करि दीनी आब अनीति अधर्म ॥
उल्टी नाई नाज जब मैसू कणि दीनो ।
सुल्टी नाई उनूहाति फिर भरै लीनी ॥
बटा नी हिटण दिना कैंकि चेलि ब्वारी ।
जब्बरजस्ती करि दीनी इज्जत में ख्वारी ॥

भलि चेलि जैकि देखि घर में लीआनी ।
भल च्यल जैक देख नौकर बनानी ॥
पाणि का पन्यारा लकि गोरु का गुथाण ।
देवता क मन्दिर लै मुरदों तिथाण ॥
मेला लै त्यौहार और मैंफला मोझर ।
बट हिटण कौ लकि लगै दीनी कर ॥
छड़िया चावल खानी दलिया यों दाल ।
सात फेरा चाइयायों आट खानी ब्याल ॥
लैणि क लवाद खानी बाखड़ि क सोट ।
दूध दही घृत खानी सहैदा का कोट ॥
जबर जस्ती लगै दीनो प्रजा पर कर ।
जो नि च्यल मारी जाल अर्ज नै उजर ।
पन्यरौ कि दौड़ि कोर लैरे आणि जाणि ।
ताजि ताजि सीर कउ पिनी ठन्ड पाणि ॥
निमानौ जो आव कनी हमर हुकम ।
सुणि लियो उकणि य दन्ड द्यूला हम ॥
आरी लै चीरुला कनी गदन काटूला ।
खैचि बै जवान बिकी भ्यार करि द्यूला ॥
छुरि फेरि गल काटि करुला हलाल ।
बूष भरि ह्यूला बिकी गैचि बटि खाल ॥
अति अभियान हैगो डर नै सरम ।
भौत करि हलि जब अनीति अधर्म ॥
दयानिधि द्यख जब यस अत्याचार ।
भक्ति भय हारि तब करनी विचार ॥

जल्दी हौण चैछ आब इनर विनाश ।
इनुलै जनता कणि दिहै भौत त्रास ।।
गिरी जानी दुनिया में जैक शुभ कर्मा ।
बढ़ि जानी जब जैका पाप व अधरम ।।
मिटि जैछा दुनिया में सब आन सान ।
हरै बिलै जैंछ तब वीकी सनतान ।।
तब जसी इनू हणि चन्द रजा लड़ा ।
परजा छी परेशान निरहै दगड़ा ।।
उति तब लड़ायी में सब मरि गया ।
राजबंशा कत्यूरिया एक नि रहया ।।
सूर्यबंशी राजाओं कौ सूर्य छिपि गोय ।
चन्द बन्शीं चन्द्रमा क उदय है गोय ।।
बड़ा बड़ा मरि गया वीर बलवान ।
कथैं कथै रहै गयी उनरी सन्तान ।।

मनुराल वंश

मनुराल रजवार इनरा बंशजा ।
कुमाऊ का सूर्य छिया कत्यूरिया रजा ।।
रजवार ज्यादातर असकोट रनी ।
और कुछ दानपुर गंगोली छैं कनी ।।
मनुराल ज्यादा रनी पाली पछौ मजि ।
पालि पछौ चौकोटम टमाढोन मजि ।।
सन्ट सैण मानुरा में मनुराल रनी ।
इनु हांति मनुराल गुसांई ज्यू कनी ।।

पैलि बै यों देव हया फिर हया पाल ।
फिर कुछ सार्यीं हया व दुसरी आल ॥
सार्यी शब्द बदली बै गुसाई है गोय ।
आजकल प्रचलित खालि गुसै हय ॥
चौकोटा का सयणा छै मनराल गुसै ।
बांकी आब भौत जगा कनी गुसै गुसैं ॥
सल्ट सैण मानुरा में भौत गौं इनरा ।
यो हया सयण और असामी खैकरा ॥
देखि लियो सुणि लियो करि लियो ख्याल ।
सूर्यबंशी समराट कस छिया काल ॥
कसा कसा पैलि वटिं चक्रवर्ती हया ।
आपस में फूट पड़ि मान्डलिक हया ॥
जगा जगा बनि गया छोटा छोंटा रजा ।
सयण रहया फिर आघलि बंशजा ॥
सयण वै थोकदार पधान रै गया ।
चक्रवर्ती समराट पधान रहया ॥
प्रधान का हिस्सेदार जमीदार हया ।
आखरी समय आब उलै नि रहया ॥
पधान सयण आब रया जमीदार ।
जमीदार वटि हैगी खुद कास्तकार ॥
एक नसी निभैं रनी कैकि संसार ।
कुमाऊ का समराट हैगी कास्तकार ॥
दीवान कोम का हया मोहरा कठैत ।
गीवाड़ै की गाड़ मजि रहनी यों सैत ॥

लड़ाई में मरि गया जतुक कत्यूर ।
रजा लै दीवान लकि सब बीर सूर ।।
गीवाड़ै की गाड़ मजि भूत योनि रया ।
आज आब पछाऊ में देवता है गया ।।
सब जगा पहाड़म देवता नाचनी ।
जगरिया कत्यूरौ की पिड़नाई बांचनी ।।
शेरु व हरक राम द्वीय भाई छीया ।
वल्लां नया कमराड़ गौ में रहछिया ।।
कत्यूरौ की जतरा उं लांछिया अद्धाई ।
सुणा छिया सबुकणि उनरी पिंड़ाई ।।
ननां छीटू जतरा में उनरा बयान ।
जसरा सुणिछा मैंलै धरि वटि घ्यान ।।
उनरा आंखर सब मकणि छैं याद ।
अघील लेखनु अब उनरा सम्वाद ।।
पैली कनी बोल वृत सबुकौ हंकारौ ।
ढोल में चटक मारि हंकारौ हंकारौ ।।
फिर कनी वरणन उनरी लड़ायी ।
जोश चढ़ै दीनी खूब करि बै बढ़ायी ।।
धरमा का धाम द्योछैं सत का सतौजी ।
दूदा काछैं दुलाशी यो बतानी औजी ।।
दूसरी आला का हया सिंघमा विरना ।
तीसरी आलाका हया भीकमा पितमा ।।
आल साई पाल साई इना लाड़म साई ।
इन् मयि ठुल हया राजा मालसाई ।।

वहौत कत्यूर तब उति मारि गया।
भौटबै राजुला कणि व्यबैबै जो ल्याया ॥
मोहरुवा छीपलिया कुंवर रौतान।
पामा भीमा कठैत छैं मंत्रि लै दीवान ॥
बड़ू सजेपाल हया जिया राणि गुरु।
नाचणिया यस कनीं जैजिया जैगुरु ॥
इनरी तारीफ करि जोसम चढ़ानी।
ढोल लै दमुवा कणि जोरै लै वजानी ॥
जोर जोर चिल्लै बटि बजा छीया ढोल।
जै जिया जै गुरु तब सब झण बोला ॥
नाचनै नाचनै तब शान में ए जानो।
पैरीया कपड़ा लता दान करि जानी ॥
बनिरयी आज लोग लकीरा फकीरा।
स्याप भाजि नहै गोय पिटनी लकीर ॥

कत्यूरों की जतरा

तब बाबा महा रजान को राजा, सूर्यवंशी कत्यूरबंशी पैली राजा घोट घोट को निघोट। निघोट को अरमा, अरमा को बरमा, बरमा की कन्या अदेह मति। अदेहमती अतिरुपवान गुणवान चतुर सुजान नियम धरम की पूरी। तब बाबा महांरजान को राजा विना सूर्य कणि जल चढ़ाइये भोजन नि खानी विना भगवान कणि भोग लगा इए औरों कणि विखयानी तब बाबा महांरजानको राजा। ऐसी कन्या अदेहमती अदेहमती को आसन्ती देव।

आंसन्ती कौ बासन्ती बासन्ती कौ नारंगदेव नारंगदेव को सारंगदेंव सारंगदेव को सुजान मणिपाल सुजानमणिपाल को राजा पृथीपाल, पृथीपाल की रांणि जीया, जीया को राजा धामदेंव, दूसरो आल का राजा वीरमा, राजा वीरम देव तब बाबा मँहारजान को राजा कत्यूरौ की छत्तीस आल बत्तीस परनी, भीकमसाई पीतमसाई डूना लाड़म साई राजा माल साई छै, तब बाबा महारजान को राजा नौ लाख कत्यूरी छै सत का सतौजी धरमका धामद्यो दूद का दुलासाई। इनकी छतीस परनी बाइसरौतान कुंवर कठैत छीपलीयारौतान मौहरुवा दीवान पामा कठैत भीमा कठैत ओ गूरु बूढ़ा सजेपालछै तबबाबा महारजान को राजा सींघसाधनी सिंघमा बाग सधनी बागमा छै सूर्य-वंशी दानी कत्यूर साजी खानी वासी बगस करनी। साजी पैरवी वासी बगस करनी। झौकारौका सैंतुघा मछाखानी सुई ठौकबताईया पीसीयां खानी, तरणि चेलिहीटण नोदिना वरड़ी वाकरी चरण निदिना, उल्टी नाई लै दीनी सुल्टी नाई लै लिनी। तब बाबा महाराजान को राजा धामद्यौलौ बेलाणि घाट को नकुवा मसाशा साधौ विरमद्योलै नौ कुंचियाताल को पठाण साधों राजा माल साई भोटान देश वटि राजुला सौक्यण कणि वैवे वटि ल्याय तब बाबा लखनपुर का पाखा में आसन वांका वासनवांका वांध्रा सिघासन वांका। तलीहाट रण चुली हाट बांकी रंगीली वैराठ वांकी छा तब बाबा गौली घाट चित्रशीला

में स्नान करनी जिया राणि कौ डोला कस डटण मैगो
गुरुका रंगीलौ बिजेसार वाजिगो जै जिया जै गुरु जै जिया
जैं गुरु जै जिया जै गुरु० तव बावा महाराजा को राजा ।

कत्यूरों की बंशावली

आजि सुणौ कत्यूरौ की एक वंशावलि ।
कुमाऊं का सम्राट वीर महावलि ॥
ओ शालि वाहन देव सनजय देव ।
कुमार लैं हरि त्रीय ब्रह्मशंख देव ॥
ब्रिज व वाणज्य देव विक्रम देव ।
धरम सारंग देव व किलाप देव ॥
भोज व विनयपाल भुजेन्दर देंव ।
समसि असालदेव व असोफ देंव ॥
सारंग नागजा देव व कामज्य देंव ।
कामज्य देव का बाद शलि नकुलदेंव ॥
गणपति पृथ्वीधर जयसिंघ देव ।
शंखचर सखेश्वर सोमेश्वर दैव ॥
सोमेश्वरौ दूसर नौं शनेश्वर देव ।
आघील जतुक हया सब देवै देव ॥
प्रसिद्धा का सिवदेव बृद्धराज देव ।
पृथ्वीश्वर दैव और बलकन देव ॥
आसन्ती वासन्ती दैव कटारमल देव ।
सत्य या सोखन देव और सिन्धु देव ॥

विनय किलाड़ा देव रणकीन देव ।
दूसर नौ हय विक रणकीन देव ॥
नीलया निरज देव ब्रजबाहू देव ।
और हया वीक बांद कार्य सिद्ध देंव ॥
पै हया गौरांग दैव सानडिल्यदेंव ।
हसीनरा देवहया तिलकराज देव ॥
उदगशीला देव हया व पितमदेंव ।
धामदेव ब्रह्मदेव व बीरम देव ॥
इनू में आखिरी राजा त्रियलोक पाल ।
अभयराज असकोट गया ततकाल ॥
त्रिलोकपाला का च्यला कहलाया मल ।
उयो बंश मजि हया एक नाग मल ॥
नाग मला हया तब और द्वी च्यला ।
अरजुन शाही और समशेंर मल ॥
आब देखि लियो आजि आधीलाकाहाल ।
साइ और मल हैबै पैलि पालै पाल ॥
निरभय पाल और भारतीय पाल ।
भूपाल नैरव पाल रतन शंखपाल ॥
श्यामपाल शाहपाल और साईपाल ।
सुरजन भोजपाल और भतरपाल ॥
सुरजन अच्छपाल तींरलोकपाल ।
सुरज जगतपाल और प्रजापाल ॥
रायपाल महेन्दर और जयनपाल ।
बिरबल पाल और अमरसिंह पाल ॥

अभयपाल अच्छरण लै या उछवपाल ।
विजय व रुद्रपाल महेन्द्र पाल ॥
महेन्दरा बाद हया बहादुर पाल ।
वीका भाई तेजपाल हया बीई काल ॥
वीका बाद हया एक पुसकर पाल ।
कुंवर गोविन्द सिंह और गजेंपाल ॥
एक हया वीक बाद भूपेन्दर पाल ।
विक्करम बहादुर हया वोई काल ॥

रुद्री दत्त पन्त का लिखा इतिहास

रुद्रदत पन्त ज्यू का हता का लेखिया ।
यतु नाम और छैं यो इनुकैं देखिया ॥
धाम देव ब्रह्मदेव आसन अभया ।
निर्भय भरती पाल भैरौ पाल हया ॥
राजपाल श्यामपाल और शाहीपाल ।
सूर्यपाल भोजपाल महेन्दर पाल ॥
शिव रतन बलि हया या सूरत पाल ।
अच्छपाल तीरलोक पाल सुन्दरपाल ॥
जगती फिरोज पाल और राईपाल ।
महेन्द्र जयन्ती पाल बीरबल पाल ॥
अमर अभय पाल व अच्छप पाल ।
विजय महेन्द्र पाल हिकमत पाल ॥
दलजीत पाल और बहादुर पाल ।
आघील देखिया आजि कत्यूरौका हाल ॥

कत्यूरौक का बंश मजि यस हया रजा ।
सम्राट और हया भौत इनू मजा ॥
चक्रवर्ती सम्राट आघील यों हया ।
कुमाऊ में जो आपणि धाक जमै गया ॥
बासूदेव कनक लै व बसन्त देव ।
खरप कल्याण देव व जीमुन देव ॥
निर्मल या ननूराट इस्तारण देव ।
ललित भुदेव देव सलौणि व देव ॥
इच्छट दैशट देव पदमट देव ।
सुनिराज देव और देवपाल देव ॥
यतुक यो चक्रवर्ती समराट हया ।
गिरि राज चक्र चूड़ामणि पद हया ॥
बाद में इनर राज छिन्न भिन्न हय ।
कुमाऊं में समराट फिर क्वे निहय ॥
कुछ जो यो एति बटि गया डोटि हणि ।
उनरी पिणनाई लकि सुणौ चिन्तामणि ॥
शाली शक्ति वाहन लै हरि ब्रह्मादेव ।
श्री ब्रह्म ब्रज देव विक्र मण देव ॥
धर्मपाल नीलपाल पूरजा रज देव ।
भोजराज अमर लै व अमाल देव ॥
सारंग नकुल देव जयसिंह देव ।
अनिजाल विद्यराज पृथीश्वर देव ॥
फनपाल देव हया आसन्ती बासन्ती ।
कटार व सिंह मल कणि मल भन्ती ॥

निर्मल व नील राज ब्रज वाह देव ।
गौराब व सीयामल इन्तराज देव ॥
नील व फटक शीला पीरथिवी देव ।
धाम देंव ब्रह्म देव त्रीयसोक देव ॥
निरंजन नागमल अरजुन साई ।
भूपति व हरिसाई राम प्रवर साई ॥
रुद्र व विक्रम साइ मानधाता साई ।
रघुनाथ हरसाई और कृष्णासाई ॥
दीपसाई विष्णु साई परदीप साई ।
सबु है अखरी रजा हया हंससाई ॥
यतुक है कत्यूरों की डोटी बंशावली ।
बड़ा बड़ा रजा हया वीर और वलि ॥
आधीला सुणिया आब धरि वटि घ्यान ।
पाली पछौ कत्योरौं का करनू बयान ॥
य उनरी वंशावली देखि बै लेखनू ।
कुमाऊँ कौ इतिहास लेखिया देखनू ॥
इतिहास बद्रीदत्त पाण्डे ज्यू लेखनी ।
आधोला अनवेश कौ कौ लेखिया देखनी ॥
अठाकिशन कानिधम हून सांग फरिस्ता ।
अंग्रेजी अनवेशक बतानी यो रस्ता ॥

पाली पछाऊ के राजाओं की बंशावली

आसन्ती बासन्ती देव व गौरांग देव ।
गौरांग देव का बाद श्यामल देव ॥

फिर छै फेणव राई व केशव राई ।
अजवगजव राई और नै क्वे राई ।।
फिर छै सुजान देव और सारंग देव ।
बिरम व वागदेब सूरदेव देव ।।
पितम व धाम देव द्विय राज हया ।
उवखत गढ़वाल हणि नहै गया ।।
भाव व पालड़ देब और किलण देंव ।
पृथू जपू गुसायी छै और लड़ देव ।।
जपू गुसाई का भाई सारंग गुसायी ।
उदेपुर पट लागौ हाट मजि पाई ।।
मौजूद छैं मनुराल इनरा बंशज ।
चौकोट में चचरोटी जसपुरा रज ।।
धर्मसिंह भवान सिंह उनरा बंशज ।
सयण छैं आजकल पैली वै छी रजा ।।
कहैड़ गौ टमाढौन इनरी जागीर ।
कत्यूरों की सन्तान योंयीं छैं आखीर ।।
योई हई कत्यूरौ की आखीरी पीड़ नाई ।
ययी वंश मजि एक हया मालसाई ।।
चिन्तामणि आजि एकैं आधिल लेखिया ।
रसिक पाठक लोगों आधील देखिया ।।

।। कुमाऊ के सम्राट प्रथम भाग समाप्त ।।

नोटः—कुमाऊं के सम्राट दूसरा भाग में पढ़िये राजा मालसाई का राज्यभिषेक और राजुला की बागेश्वर मेले की शैल :—

शुभ सूचना

प्रिय बन्धुओ,

आपको यह जानकर हर्ष होगा कि हमारे यहाँ पुस्तक के अलावा छपाई का भी प्रबन्ध है। निम्न प्रकार से आपकी सेवा के लिए उपस्थित है :—

- विवाह, मुण्डन, गृह, प्रवेश, विजिटिंग कार्ड आदि बाजार से अच्छे तथा रियायत पर छापे जाते है।
- हिन्दी तथा अंग्रेजी टाइप में हर प्रकार का काम जैसे बिल बुक, आर्डर बुक, बाउचर, पोस्टर इश्तहार सभी काम बाजार से बेहतर होगा।
- हर प्रकार की कुमाऊनी तथा हिन्दी की धार्मिक पुस्तकें छपने का भी प्रबन्ध है। कर्मकाण्ड तथा पूजा-पाठ की पुस्तकें भी छपने का प्रबन्ध है।
- कलेण्डर तथा नए वर्ष की डायरियाँ भी हम अपने व्यापारियों को भेज सकते हैं।
- कार्यालयों तथा स्कूलों में छपी तथा बिना छपी स्टेशनरी भी भेज सकते हैं।

उक्त संस्था कुमाऊनी साहित्य मुद्रक के नाम से जनवरी सन् १९७७ से छपाई यन्त्र का उद्घाटन कुमाऊनी साहित्य मण्डल के संरक्षक श्री कुलानन्द भारतीय जी ने किया था। तब से यह संस्था सुचारू रूप से चल रही है।

कुमाऊनी साहित्य मुद्रक

हर प्रकार की पुस्तक तथा उच्चकोटि की छपाई का उत्तम स्थान

चौरासी घंटा, बाजार सीताराम दिल्ली-११००३६